अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी
परमधर्मपीठीय विभाग

हिंदू और ईसाई: संवाद और सहयोग के माध्यम से नोस्ट्रा एताते की भावना में विश्व शांति का निर्माण करें

दीपावली सन्देश 2025

वाटिकन सिटी

प्रिय मित्रो,

परमधर्मपीठीय अंतरधार्मिक परिसंवाद सम्बन्धी विभाग 20 अक्टूबर को मनाये जा रहे दीपावली महापर्व की हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ आपको अर्पित करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा है। प्रकाश का यह पर्व आपके जीवन को आलोकित करे तथा आपके परिवारों और समुदायों को आनंद, एकता और शांति प्रदान करे।

दीपावली के आठवें दिन इस वर्ष काथलिक कलीसिया के युगान्तकारी दस्तावेज़ *नोस्ट्रा एताते* (*Nostra Aetate*) (**28** अक्टूबर **2025**) की **60**वीं वर्षगाँठ है, जिसने दुनिया भर के काथलिकों को अन्य धार्मिक परंपराओं के लोगों के साथ संवाद और सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। शांति को बढ़ावा देने हेतु इसने सभी से उन धार्मिक परंपराओं में पाई जाने वाली "अच्छी चीजों: आध्यात्मिक और नैतिक, साथ ही सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को पहचानने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने" का आग्रह किया (NA 2)।

पिछले छह दशकों में, अंतरधार्मिक संवाद की यह ऐतिहासिक पहल विविध धार्मिक विश्वासों और गैर-विश्वासों वाले लोगों के उदारतापूर्ण समर्थन और प्रोत्साहन से एक वैश्विक परियोजना के रूप में विकसित हो चुकी है, जिससे विश्व शांति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ है। स्वयं यह सन्देश उस महान् दृष्टि का प्रतिफल है।

हीरक जयंती के इस अवसर पर, *नोस्ट्रा एताते,* हमसे शांति के मार्ग के रूप में अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का आह्वान करता है। इस त्यौहार के मौसम में हम आपको इस बात पर मनन-चिन्तन के लिये आमंत्रित करते हैं कि किस प्रकार ईसाई और हिंदू, सभी धर्मों और सद्भावना के लोगों के साथ मिलकर *नोस्ट्रा एताते* की भावना में, संवाद और सहयोग के माध्यम से, शांति हेतु अपने साझा प्रयासों को मज़बूत कर सकते हैं।

यह भावना "लोगों में क्या समानता है और क्या उन्हें भ्रातृत्व की ओर आकर्षित करता है" विषय पर केन्द्रित होकर "लोगों के बीच, वास्तव में राष्ट्रों के बीच एकता और प्रेम को बढ़ावा देने" के संकल्प में निहित है" (NA 1)। यह हमें अन्य धर्मों में जो कुछ "सत्य और पवित्र है उसे अस्वीकार न करने" और "ईमानदारी से उन आचरणों और जीवन शैलियों, उन उपदेशों और शिक्षाओं" को सच्ची श्रद्धा के साथ कायम रखने का अनुरोध करती है जो "उस सत्य की किरण को प्रतिबिंबित करती हैं जो सभी को प्रबुद्ध करती है" (NA 2)। यह "संपूर्ण मानवता के लाभ के लिए सामाजिक न्याय और नैतिक कल्याण, साथ ही शांति और स्वतंत्रता को भी संरक्षित करने और प्रवर्तित करने के दृढ़ संकल्प को प्रेरित करता है" (NA 3)।

नोस्ट्रा एताते की घोषणा के बाद से यद्यपि अधिक प्रगति हुई है तथापि अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। वर्तमान विश्व में जहां अविश्वास, ध्रुवीकरण, तनाव और विभाजन बढ़ रहे हैं, अंतरधार्मिक संवाद पहले से भी कहीं अधिक आवश्यक बन गया है। सभी के लिए आशा का प्रकाशस्तंभ बनकर इसे एकता और सद्भाव के बीज बोते रहना चाहिए। अंतरधार्मिक समझदारी और सहयोग को हमारे दैनिक जीवन में स्थान मिलना चाहिए तथा यह हमारे साथ-साथ रहने का स्वाभाविक तरीका बनना चाहिए।

सन्त पापा लियो चौदहवें ने सभी लोगों को "संवाद और मुलाकात के माध्यम से लोगों के बीच सेतुओं का निर्माण करने और एक साथ जुड़ने" का आह्वान किया है (रोम शहर और विश्व को दिया गया पहला सन्देश मई 2025)। वे हमें याद दिलाते हैं कि शांति के लिए संवाद और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देना "एक ऐसा कार्य है जो चाहे आस्तिक हों या नास्तिक, सभी को सौंपा गया है, जिन्हें इसे चिंतन और व्यक्ति की गरिमा तथा जन-कल्याण से प्रेरित व्यवहार के माध्यम से आगे बढ़ाना चाहिए" ("आरेना ऑफ पीस" (वेरोना) से जुड़े आंदोलनों और संघों को संबोधन, 30 मई 2025)। एक साथ मिलकर काम करने से ही हम सत्य, न्याय, प्रेम और स्वतंत्रता पर आधारित शांति को सुरक्षित और कायम रख सकते हैं (दे. जॉन पॉल द्वितीय, विश्व शांति दिवस के उपलक्ष्य में संदेश, 1 जनवरी 2003)।

जीवन और विश्वास के सम्बन्ध में शिक्षा के प्राथमिक स्थान के रूप में परिवार की इन मूल्यों के पोषण में सर्वोपरि भूमिका रहती है। शांति को बढ़ावा देने में धार्मिक परंपराओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, विशेष रूप से, धार्मिक नेताओं का यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि वे सोदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने अनुयायियों को विविधता का सम्मान करने तथा मैत्री और भाईचारे के सेतुओं का निर्माण करने हेतु प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार शैक्षिक संस्थाएं और मीडिया भी शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए दिलों और दिमागों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस तरह, अंतरधार्मिक संवाद और सहयोग को शांति की संस्कृति विकसित करने के लिए अपरिहार्य उपकरण के रूप में अपनाया जा सकता है और अपनाया जाना चाहिए; उन्हें शांति के निर्माण और उसकी रक्षा के प्रति समर्पित शक्तिशाली, गतिशील आंदोलन के रूप में भी विकसित किया जाना चाहिए।

अपनी-अपनी धार्मिक परंपराओं में जड़ीभूत विश्वासी तथा साझा मूल्यों और शांति के लिए समान चिन्ताओं से युक्त और एकजुट लोगों के रूप में, आइए - हिंदू और ईसाई हम अन्य धर्मावलम्बियों और सभी शुभचिन्तकों के साथ हाथ मिलाते हुए - अपने छोटे-बड़े तरीकों से अपने घरों, समुदायों और समाजों में शांति पोषित करें। हम "संवाद की संस्कृति को मार्ग के रूप में; पारस्परिक सहयोग को आचार संहिता के रूप में; पारस्परिक समझ को विधि और मानक के रूप में" बढ़ावा देकर विश्व शांति का निर्माण करने का प्रयास करें (विश्व शांति और साथ मिलकर जीवनयापन हेतु मानव भ्रातृत्व पर दस्तावेज़, आबू धाबी, 4 फ़रवरी 2019)।

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं!

कार्डिनल जॉर्ज जैकब कूवकाड

प्रीफेक्ट

मोन्सिन्ज्ञोर इंदुनिल कोडिथुवाक्कु जनकरत्ने कंकनमलगे

सचिव

DICASTERY FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.dicasteryinterreligious.va